SPECIAL ISSUE
January 2020

VIDYAWARTA

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

स्वयं वित्त पोषित,
एक दिवसिय राष्ट्रीय संगोष्ठी तिथि ४ जनवरी २०२०

हिंदी साहित्य में कृषक चेतना

संयोजक
हिंदी विभाग

श्री गजानन शिक्षण प्रसारक मंडल, येलदरी कैंम्प द्वारा संचलित, (भाषिक मारवाडी अल्पसंख्यांक

तोष्णीवाल कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,

सेनगाव, ता.सेनगांव, जि.हिंगोली

■ संलग्न ■

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

प्रा.एस.जी.तळणीकर
प्र.प्रधानाचार्य

प्रा.प्रमोद घन
संगोष्ठी सचिव

डॉ.शंकर पजई
संगोष्ठी संयोजक

डॉ.विजय
संगोष्ठी सह स

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hi

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

संपादक

डॉ. शंकर रामभाऊ पजई

सह—संपादक

प्रा. प्रमोद किशनराव घन

डॉ. विजय गणेशराव वाघ

अतिथि संपादक

डॉ. रमेश संभाजी कुरे

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hin

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318
Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Journal
January 2020
Special Issue-01
011

13) गोदान : कृषक जीवन यथार्थ चेतना
लेफ्ट. डॉ. अनिता शिंदे, अहमदपूर ||65

14) हिंदी उपन्यासों में कृषक चेतना
प्रा. डॉ. रणजीत जाधव, ता. जि. लातूर ||67

15) अभंग–गाथा नाटक मेंचित्रित कृषक त्रासदी और विद्रोह
डॉ. रमेश संभाजी कुरे, जि. हिंगोली, महाराष्ट्र ||70

16) संजीव के उपन्यास 'फाँस' मे कृषक चेतना
डॉ. कांचन बाहेती (रांदड), नांदेड ||74

[redacted] ||78

18) हिंदी उपन्यासों में कृषक चेतना
डॉ. अर्शिया सैय्यद अफसरअली, नागपूर ||81

19) नागार्जुन की कविताओं में कृषक चेतना
डॉ. सुभाष क्षीरसागर, बसमतनगर ||84

20) गोदान उपन्यास में कृषक चेतना
डॉ. बळीराम संभाजी भुक्तरे, जि. लातुर, महाराष्ट्र ||87

21) किसानों के शोषण एवं अभाष ग्रस्तता का यथार्थ चित्रण पूस की रात
प्रा.डॉ. एम. डी. इंगोले, जि. परभणी, (महाराष्ट्र) ||90

22) मिथिलेश्वर के उपन्यास साहित्य में ग्राम संवेदना
प्रा.डॉ. दिग्विजय टेंगसे, औरंगाबाद ||91

23) नरेन्द्र निर्मोही कृत परनोट कहानी में कृषक चेतना
डॉ. पुष्पलता अग्रवाल, लातूर ||96

24) गोदान मे व्यक्त भारतीय किसान की त्रासदी
डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे, जिला नांदेड ||99

25) कभी न छोडें खेत उपन्यास में कृषक चेतना
डॉ. सविता चोखोबा किर्ते, लातूर ||102

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Journal | January 2020 Special Issue-01 | 078

का आगे बढकर बाजार और तंत्र को अपने नियंत्रण मे लेना होगा ।"[१४]

'फाँस' किसी एक किसान, किसी एक खेतीहर परिवार, किसी एक गाँव या किसी एक प्रांत की खेती और किसानों की समस्याओं की कथाभर नही है यह विदर्भ से शुरु होकर पूरे देश के किसानों की समस्याओं को समेटता हुआ उनकी सब की करुण गाथा बनकर उभरता है। 'फाँस' तमाम जरुरी सवालों के साथ हमे सोचने पर विवश कर देता है ।

संदर्भ:—

१) प्रेमपाल शर्मा: फाँस उपन्यास भूमिका
२) संजीव : फाँस उपन्यास पृ.५३
३) वही पृ. ५७
४) वही पृ.११७
५) वही पृ.१४५
६) वही पृ.४३
७) वही पृ.१५३
८) वही पृ. ३८
९) वही पृ.१८३
१०) वही पृ.२७
११) वही पृ.१९
१२) वही पृ.३६
१३) प्रेमपाल शर्मा: फाँस उपन्यास भूमिका
१४) संजीव फाँस उपन्यास पृ. १०९

□□□

17

साठोत्तरी नाटकों में कृषक जीवन

[redacted]
हिन्दी विभागाध्यक्ष,
शिवाजी महाविद्यालय हिंगोली, महाराष्ट्र

****

साठोत्तरी हिन्दी नाटक भारतीय परिवेश की जीवन्त अभिव्यक्ति का प्रामाणिक दस्तावेज है। स्वतंत्र्यता के पश्चात जब भारतीय जन जीवन में पर्याप्त परिवर्तन आया तो हिन्दी नाटक भी उस बदले परिवेश की अभिव्यक्ति करने लगा। आज नाटक रंगमंच और जीवन से समान रुप से जुडा है और वह वर्तमान युग की मानसिक जटिलताओं तथा सभी प्रकार की संवेदनाओं को प्रखरता से व्यक्त कर रहा है। आज के हिन्दी नाटक से जीवन का कोई क्षेत्र अछुता नहीं रहा है[१] आज का नाटककार रचना में भोगे हुए यथार्थ के स्तर से सम्बध्द विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और शहरी जीवन की स्थितियों को अभिव्यक्ति का आधार बना रहा है। इन नाटकों में जनता की समस्याओं को जनता की भाषा में अभिव्यक्ति करने का प्रयास किया जा रहा है। "सन १९६० के बाद हिन्दी रंगमंच ने लेखन, अभिनय, दृश्य सज्जा, वैज्ञानिक उपकरनों के उपयोग, वेशभूषा भाषा आदि सभी पक्षों मे एक विकास यात्रा प्रारंभ की, जिसके फलस्वरुप वर्षो से जुडे तत्वों से पूर्ण नाटक सामने आने लगे।"[२]

वृदावनलाल वर्मा के निरन्तर (१९५६) के नाटक में हरिजनों व्दारा कुओं से पानी न भरने देने तथा मन्दिरो में प्रवेश न करने देने की प्रवृत्ति के विरोध में हरिजनों ने हडताल की है, जुलूस निकाले है ओर भीड ने नोट लगाकर अपने संवैधानिक अधिकारों की माँग की है— क्रान्ति चिरजीवी हो। छुआछूत का नाश हो। हमारा वेतन बढाओ। हमें कुओ से पानी भरने दो।

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

MAH MUL/03051/2012 | ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Journal | January 2020 Special Issue-01 | 079

मन्दिरो में प्रवेश करने दो। अत्याचार का धुआँ बन जावे। हम सत्याग्रह करेंगे।

अस्पृश्यता यह एक समाज को लगा हुआ एक शाप है। ग्रामीण आंचल में यह दृढता से फैला है और आजादी के सत्तर साल बाद भी यह खत्म नहीं हो रहा है। रमेश मेहता के रोटी और बेटी(१९६०) नाटक में उच्च वर्ग के साथ हरिजनों की एकात्मकता और समानता पर बल दिया गया है। प्रतिपाद्य समस्या समाधान के लिए इंगित करते हुए नाटककार ने उद्देष्य में लिखा है— आज एक हरिजन हमारे देश का राष्ट्रपति बन सकता है, पर भीतर ही भीतर एक बहुत बडे समाज के साथ रोटी और बेटी का व्यवहार नहीं कर सकता। इसका अर्थ है कि हम उन्हे अब भी इंसान मानने से इन्कार करते है। उनके साथ भोजन करने और बेटी—बेटी व्याहने से कतराते हैं। जब तक हमारे मन में यह मैल घुल नहीं जाता, हम समाज के इतने बडे अंग को अपना नहीं सकते, अपने में धुल —मिला नहीं सकते, ऊँच—नीच भेद—भाव को मिटा नहीं सकते, तब तक यह समस्या ज्यों की त्यों बनीं रहेगी।

ग्रामीण भाग में रहने वाले किसान अपना जीवन जीते समय समय कई अन्धश्रध्दा लेकर जीते है। इस बात का फायदा समाज के बुरे लोग उठाते है। आनन्दप्रकाश जैन का मास्टर जी(१९६०) मास्टर दीनानाथ जी के अस्पृश्यता निवारण सम्बन्धी प्रयत्नों व उनके त्याग—बलिदान तथा कष्ट सहिष्णुता की भावना को अभिव्यक्त करता है। गाँधी जी के आदर्शो और सिध्दान्तों के कच्चे अनुयायी मास्टर जी चौधरी जीजीवनराम के हर अत्याचार को शान्तिपुर्वक सहन करते है। मास्टर जी के अपरिमित श्रम तथा असीम सहिष्णुता से अन्त में चौधरी साहब की आँखें खुल जाती है और तब वे मास्टर जी से क्षमा—याचना करते हुए यह प्रतिज्ञा करत है— गाँव में पक्का स्कूल बनवाऊँगा और उमसें हरिजनों और ब्राम्हणों के बच्चे—बूढे साथ—साथ पढेंगे। मास्टर जी के त्याग को यह गांव जनम—जनम तक याद रखेगा।

गाव का किसान भोला भाला है वह परम्परागत मान्यताओं में जकडा हुआ है। जाति—पाति के बंधनों में बंधा है। इस दिवार को तोडना आसान नहीं है। ज्ञानदेव अग्निहोत्री का माटी जागी रे(१९६४) जातीय भावना की समाप्ति की आवश्यकता पर बल देता है। प्रकाश भोला से कहता है— हम सब धर्म—कर्म, ऊँच—नीच, तेरा—मेरा आदि भावनाओं की दीवारों में जकड गए है। हमें इन सब को तोडना है कोने—कोने में यही हो रहा है। दीवारें टूट रही है। लोग जाग रहे हैं।

डॉ. लक्ष्मीनाराण लाल का एक सत्य हरिश्चन्द्र (१९७६) का कथानक एक साथ पौराणिक और आधुनिक परिप्रेक्ष्य को लेकर चलता है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में गांव के भूतपूर्व जमींदार (वर्तमान राजनेता) देवधर के नेतृत्व में सवर्णो के अत्याचार और शोषण के शिकार किसान और हरिजनों का संघर्ष इसका केन्द्र है। देवधर जैसे राजनेता धर्म और सामाजिक रूढियों के नाम पर निम्नवर्गीय जनता का शोषण कर भौतिक ऐश्वर्यो पर एकाधिकार करते रहे है। निम्नवर्ग का लौका इस दमन और अधिकार हरण के प्रति विरोध को जनता में जाग्रत करने के लिए सत्य हरिश्चन्द्र नाटक को युगानुकूल अर्थ देकर प्रस्तुत करता है। मूलत: राजनीति सत्य की पक्षधर नहीं, वह झूठ की नींव पर खडी है और लौका (हरिश्चन्द्र) जैसे सत्यवादियों का सिर कुचलना चाहती है। भावना पर जीने वाले ग्रामीण किसान राजनीति के दाव—पेंच समझ नहीं पातें । फलत: राजनीतिज्ञ उनकी इस कमजोरी का लाभ उठाकर कहीं शूद्र सवर्ण से संघर्ष करा देते है, तो कहीं साम्प्रदायिक आग भडकवा देते है।

डॉ. लक्ष्मीनाराण लाल का ही गंगा माटी (१९७७) एवं जीवन—विरोध साधना पध्दतियों में उलझे ग्रामीनों की दशा पर प्रकाश डालते हुए इस समस्या को भी अपने में समेटे हुए है। नाटक मानव—समानता, प्रेम, विश्वास और हरिजनों को सामाजिक मान्यता देने तथा जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करता है। ग्रामीण जीवन में आने वाली खासकर किसानों के जीवन यापण में आने वाली समस्या का चित्रण किया गया है। गाँव में प्रचलित बाल—विवाह की समस्या और पर्दाप्रथा के दुष्परिणामों की ओर डॉ. लाल ने गंगामाटी में पुरूष के संवादों के व्दारा प्रकाश डाला है।

चुनाव, राजनीति, शासन और सामाजिक स्तर

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Journal | January 2020 Special Issue-01 | 080

पर फैली विकृतियों, शोषण व उत्पीडन की ग्रामीण समाज में कृषक वर्ग की जो दशा है, उस पर भी नाटककारों की दृष्टि गई है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के 'बकरी' में इस दशाओं का मार्मिक चित्रण किया गया है। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का 'बकरी'(१९७४) नाटक के सम्बन्ध में कविता नागपाल का अभिमत है– व्यवस्था के समकालीन राजनीति के छदम और उसके जन–विरोधी एवं जनतन्त–विरोधी चरित्र पर प्रहार करता हुआ यह नाटक जनता विशेषकर ग्रामीण जनता पर लादी गई धर्मान्धिता और उसमें होने वाले शोषण, उत्पीडन का चित्रण करते हुए एक ऐसे गुस्से का रेखांकन करता है जिसे यदि समग्र यथार्थ से जोडकर देखा जाय तो जनवादी चेतना के प्रसार में सहायक हो सकता है।

इस नाटक में युवक जन चेतना सपन्न युवा–पीढी का प्रतीक है तो विपती विपत्ति की मारी आम जनता की और ग्रामीण अविवेकपूर्ण अंधश्रध्दा के तथा दुर्जन, कर्मवरी और सत्यवीर आधुनिक नेताओं के प्रतीक है, तो सिपाही उन रक्षकों का जो भेड के रूप में भेडिये बने हुये है। आज के तथाकथित जननेता बकरी (गांधीवादी) सिध्दान्तो के नाम पर अनपढ निरीह जनता को किस प्रकार से ठग रहे है, इसका एक उदाहरण दृष्टव्य है–

दुर्जन–कर्मवीर, अब इनके पास कुछ नहीं है। खुक्ख है साले।

कर्मवीर–फिर भी काफी चढावा आ गया है।

दुर्जन–हाँ सो तो ठीक है, पर कुछ और उपाय भी.।

चुनाव और प्रजातन्त्र के नाम पर जनता के साथ कैसा भद्दा मजाक चल रहा है, उसे युवक के निम्नांकित शब्द मार्मिकता के उदघाटित करते है–.... .....वोट, चुनाव सब मजाक हो गया है। सब झूठ पर चल रहा है। गरीबों की बकरी पकडकर उनसे पहले पैसा दुहा। अब वोट दुह रहे है, फिर पद और कुर्सी दुहेंगे। गांधी व लोहिया के नामपर राजनीति करनेवाले यह व्यग्य नाटक है।[3] व ग्रामीन भोली जनता को नेता कैसे लुटते है इसका उदाहरण बकरी नाटक है। जनता कल्याण के लिए बकरी शांति प्रतिष्ठान, बकरी संस्थान, बकरी सेवासंघ, बकरी मण्डल, आदि संस्थाओं की स्थापना कर भोली–भाली जनता को भनपूर लूटते है।[4]

गावों की समस्याओं को लेकर लिखे गये नाटकों में भारतीय किसानों की समस्या की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है। सन १९५४ में प्रकाशित बन्दी नामक नाटक में जगदीश चन्द्र माथुर ने ग्राम–विकास समिति की स्थापना में आने वाले विघ्नों का जीवन्त चित्र उपस्थित किया है। इसमें दिखाया गया है कि किस प्रकार विधान सभाओं से लेकर ग्रामपंचायतों तक के चुनावों में राजनीति पार्टियाँ ग्राम को इकाई मानकर अपनी सारी शक्तियाँ प्रचार में लगा देती है, अपने प्रत्याशियों को विजयी बनाने के लिये न्याय–अन्याय, धर्म–अधर्म और जबरदस्ती का व्यवहार करती है। ग्राम्य–विकास के लिये मिलने वाली धनराशि स्वार्थी व्यक्तियों की जेबों में भरी जा रही है और अधिकारियों का ध्यान विकास पर नहीं, धन पर टिका है।

डॉ. लाल ने 'संस्कार ध्वज'(१९७८) में अवधपुर गांव की घटनाओं के माध्यम से स्वतंत्रतापुर्व और स्वतंत्रता पश्चात की स्थितियों को दर्शाया है। नाटककार के शब्दों में–नाटक में जहाँ पतरे भारत की तस्वीर उभरकर सामन्तवाद पद चोट की गई है, वहीं यह भी दर्शाया गया है कि दरिद्रता, अभाव और अंध–विश्वास के अंधेरे से हुआ भारतवासी एक नये विव्दान की ओर बढ रहा है। ....नाटक में यह भी निरूपित करने का प्रयत्न हुआ है कि जात–पांत, छुआछूत, अभाव इनको हमेशा हमारे शोषकों, प्रचाारकों ने बढा दिया और हमारा भाषण किया । ...... संस्कार ध्वज ज्ञान का प्रतीक है। ज्ञान के सहारे ही ....की तस्वीर बदली जा सकती है और अज्ञान के विषात्क अंधेरे संयुक्त पायी जा सकती है।

वस्तुत: नाटककार का उद्देश्य सामान्य जन के पक्ष से भारतीय ग्रामीण जीवन की सम्पुर्ण व्यवस्था (अपनी तमाम अच्छाइयों–बुराइयों एवं सामर्थ्य सीमाओं के साथ) और अंग्रेजी शासन के टकरावों–प्रभावों का विश्लेषण करते हुए आज के तथाकथित प्रजातांत्रिक पंचायती राज के कटु यथार्थ को प्रस्तुत करना है, जहाँ पंच अब परमेश्वर के बाजार गुण्डा या शैतान हो गया है।[5]

हमारे गाँवों की जिन्दगी सुनियोजित विकास की प्रेरक शक्ति के आधार पर किस तीव्र गति से अन्धकार से प्रकाश की ओर जा रहा है ज्ञानदेव अग्निहोत्री के माटी जागी रे नाटक की यही परिपीठिका है। नाटककार ने नायक प्रकाश की भूमिकाव्दारा ग्रामीण कृषक जीवन के सामाजिक मुल्यों के संघर्ष की कलात्मक अभिव्यक्ति की है।

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

MAH MUL/03051/2012 ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Journal | January 2020 Special Issue-01 | 081

सुधीर कुमार राय का गाँव की मिटटी (१९५०), षील का किसान (१९६०), रामावतार चेतन का धरती की महक (१९५९) नाटक भी स्वाधीन भारत के ग्रामीण जीवन की वास्तविकता, किसानों की समस्याओं और गाँवों में बढते विकास—कार्यक्रमों की अभिव्यक्ति करते है।

अंधा कुआं में कमलापुर गाँवों की पृष्टभूमि में भगीती और सूका के विषमताग्रस्त दाम्पत्य जीवन का वर्णन किया गया है। नाटककार के अनुसार अंध कुआं वह ग्रामीण समाज है जो आर्थिक संकट से ग्रस्त होकर अपनी बेटियों को थोडे से रूपयों के लिए बेच देता है। वह समाज जो अभी भी नारी सम्बन्धी मध्ययुगीन धारणाओं को मरे साँप की तरह गले में धारण किये हुए है। सूका के मूँह से ही यह बात कहलाई गई है कि लोग कहते है कि मेरी कोख अंधी है, इसीलिए जब मैं करने भी गयी, तो मुझे मेरे करम में अंधा कुआँ ही मिला। पर मैं समझती हुँ, वह कोई कुआँ न था, वह था गाँव का झूठ।

उपर्युक्त विवेचन इस तथ्य की ओर स्पष्ट संकेत करता है कि हिन्दी नाटककारों ने ग्रामीण परिवेश में जीने वाले किसानों की समस्याओं की ओर उतना ध्यान नहीं दिया है जितना कि नगरीय तथा महानगरीय परिवेश की ओर। नाटक और रंगमंच के सम्पुर्ण विकास तथा प्रसार की दृष्टि से इस स्थिति को सुखद नहीं कहा जा सकता । वस्तुत: आज आश्यकता इस बात की है कि हिन्दी नाटककार ग्रामीण जीवन की अनुभूतियों और समस्याओं को भी अपनी नाटकीय अभिव्यक्ति का लक्ष्य बनायें।

संदर्भ सूची—

१. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य एवं साहित्यकार डॉ नामदेव उतकर चंद्रलोक प्रकाशन कानपुर प्र. सं. २००२ पृ. ९५

२. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक डॉ.रीता कुमार विभु प्रकाशन सहिबाबाद प्र.सं. १९८० पृ. २२

३. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना और उनका साहित्य डॉ. कल्पना अग्रवाल चंद्रलोक प्रकाशन कानपुर प्र. सं. २००० पृ. १९७

४. आधुनिक हिन्दी नाटक डॉ. बनवीर प्रसाद शर्मा अनंग प्रकाशन दिल्ली प्र.सं. २००१पृ. १२९

५. आज के हिन्दी रंगनाटक : परिवेश और परिदृश्य जयदेव तनेजा तक्षशिला प्रकाशन पृ. ११३

18

हिंदी उपन्यासों में कृषक चेतना

डॉ. अर्शिया सैय्यद अफसरअली
हिंदी विभाग प्रमुख,
तिरपुडे समाजकार्य महाविद्यालय सदर, नागपूर

****

साहित्य वह शस्त्र है जिसके द्वारा समाज में व्याप्त कुरितियों, समस्याओं, गलत धारणाओं पर प्रहार कर उसके स्थान पर नए मूल्यों को स्थापित किया जा सकता है। हमारे देश का इतिहास गवाह है कि जब—जब देश में नव—चेतना की आवश्यकता महसूस हुई तब—तब साहित्यकारों ने अपने उत्तर दायित्व का निर्वाह बखूबी किया है। आज देश में आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहे हैं। साहित्यकारों का दायित्व इस कारण और अधिक बढ जाता है। समाज में ऐसी कई समस्याएँ है जिनको सर्वसमक्ष लाना अत्यावश्यक है। ऐसे कई वर्ग है जिनकी ज्वलंत समस्याओं पर ध्यान देकर उसपर त्वरित उपाययोजनाओं की आवश्यकता है। उनमें से एक है भारत का किसान। हमारे देश की आय के मुख्य स्त्रोत में कृषि—उत्पादन का महत्वपूर्ण योगदान है। एक समय था जब देश की अधिकांश जनता गाँवों में ही निवास करती थी और कृषि ही उनका मुख्य रोजगार था। आज नगरीकरण के बढते, नगरों का अधिक विकास हो गया और गाँव आज भी विकास के मुख्य प्रवाह में अलग—थलग पड़े हुए नजर आते हैं।

हिंदी उपन्यास साहित्य में गाँव और गाँव में रहने वाले किसानों के जीवन, उनकी समस्याओं, चुनौतियों आदि को केंद्र में रखकर प्रेमचंद से लेकर बहुत से उपन्यासकारों ने बहुत कुछ लिखा है। उन्होंने उस समय की परिस्थितियों को अपने साहित्य में दर्शाया है। आज वर्तमान, समय में भी संजीव का

T.C.
Assistant Professor
Shivaji College,Hingoli.
Tq.& Dist.Hingoli.(MS.)

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli